समकालीन भारत तथा शिक्षा (1)

प्रश्न — मैकाले के विवरण पत्र पर एक विस्तृत लेख लिखिए।

उत्तर — परिचय :— लार्ड मैकाले अंग्रेजी साहित्य का बहुत बड़ा विद्वान था। वह 10 जून 1834 ई० को भारतीय गवर्नर जनरल की काउंसिल के सदस्य के रूप में भारत आया था। जब वह भारत आया तो उसे एक महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया कि भारत में जो पाश्चात्य एवं प्राच्य विवाद चला हुआ है उसे सुलझाना ही नहीं अपितु भारत में अंग्रेजी भाषा की नींव भी रखनी है। भारत में उसका मार्गदर्शन तत्कालीन जनरल लार्ड विलियम बैंटिक ने किया। मैकाले ने जो सिफारिशें ब्रिटिश सरकार से की उन सिफारिशों को ही विवरण पत्र कहकर सम्बोधित किया। उन्होंने अपने एक विवरण पत्र की सहायता से भारत को एक आंग्ल भाषी देश बना दिया।

पाश्चात्य एवं प्राच्य विवाद का निपटारा एवं सिफारशें —

मैकाले महोदय ने बड़ी चतुराई से इस विवाद का निपटारा कर दिया जो इस प्रकार है —

1. धनराशि के खर्च की व्याख्या — मैकाले ने कहा कि एक लाख रूपये की राशि खर्च करने में ब्रिटिश सरकार बाध्यकारी नहीं है।

2. भारतीय विद्वानों की व्याख्या — उनके मतानुसार भारत के वे विद्वान जो संस्कृत, अरबी-फारसी भाषा के अलावा अंग्रेजी भाषा को जानते हैं वे श्रेष्ठ विद्वान हैं।

Scanned with CamScanner

3. साहित्य शब्द की व्याख्या - मैकाले महोदय ने कहा कि साहित्य से तात्पर्य है कि संस्कृत, अरबी एवं फारसी से ज्यादा अंग्रेजी साहित्य से ली है।

4. निस्यन्दन सिद्धान्त का प्रतिपादन - उनका मानना था कि सम्पूर्ण भारत सरकार कर्मचारियों की कमाती है। अतः वह भारत के लोगों की शिक्षा पर अधिक पैसा खर्च नहीं कर सकती। इसलिए शिक्षा केवल उच्च वर्ग के श्रेष्ठ व्यक्तियों को ही दी जाएगी। जहाँ से छन-छन कर शिक्षा निम्न लोगों तक स्वयं ही पहुँच जाएगी।

5. अंग्रेजी भाषा आधुनिक ज्ञान की कुंजी है — मैकाले का मानना था कि सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान अंग्रेजी भाषा में है जबकि संस्कृत, अरबी, फारसी भाषाओं में इनका पूरी तरह से अकाल है।

6. यह नव-चेतना लाने में सक्षम है — उनका मानना था कि भारतीय लोग अधिक मात्रा में पिछड़े हुए हैं उनमें नव ज्ञान का संचार अंग्रेजी भाषा से लाया जा सकता है।

7. अंग्रेजी शासक वर्ग द्वारा बोली जाती है — मैकाले ने स्पष्ट किया की कम्पनी के अधिकतर अधिकारी अंग्रेजी भाषा बोलते हैं। वह भारतीयों के साथ अंग्रेजी भाषा में ही विचार-विनिमय कर सकते हैं। अतः भारतीयों को अंग्रेजी भाषा सीखनी चाहिए।

8. अंग्रेजी सर्वश्रेष्ठ भाषा है — उनका मानना था कि कि अंग्रेजी भाषा सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इसको जानने वाला व्यक्ति अधिक से अधिक ज्ञानार्जन कर सकता है।

Scanned with CamScanner

मैकाले के विवरण पत्र का मूल्यांकन – किसी बात विचार या क्रिया का मूल्यांकन किन्हीं निश्चित मानदण्डों के आधार पर किया जाता है। मैकाले के विवरण पत्र का मूल्यांकन तीन आधारों पर किया जा सकता है। पहला यह कि उसका इरादा क्या था, दूसरा यह है कि उसने जो सुझाव दिए थे क्या वो भारतीयों के हित में थे तथा तीसरा यह है कि उनके कितने परिणाम भारतीयों के हित में रहे।

मैकाले का इरादा – मैकाले का मत था कि प्राच्य साहित्य और ज्ञान – विज्ञान निम्न कोटि का है, इसलिए भारतीयों की दशा सुधारने के लिए उन्हें अंग्रेजी शिक्षा देना आवश्यक है। वास्तव में मैकाले का इरादा भारतीय धर्म दर्शन और संस्कृति को जड़मूल से समाप्त करने का था। उसने बंगाल से अपने पिता को लिखे पत्र में स्वयं लिखा था " यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि हमारी शिक्षा योजना को लागू किया जाता है तो 30 वर्ष बाद बंगाल के उच्च वर्ग में कोई भी मूर्ति उपासक शेष नहीं बचेगा।" अतः ये स्पष्ट है कि भारतीयों की दृष्टि से मैकाले का इरादा नेक नहीं था वह भारतीयों के धर्म दर्शन, संस्कृति को नष्ट करना चाहता था तथा उसके स्थान पर पाश्चात्य संस्कृति, धर्म और दर्शन का विकास करना चाहता था साथ ही अपने देश के शासन को सुदृढ़ करना चाहता था।

निस्यंदन पत्र के गुण –

(क) पाश्चात्य एवं प्राच्य विवाद का निपटारा – मैकाले ने बहुत ही सुन्दर ढंग से इन विवादों का निपटारा आसानी से कर दिया।

(ख) प्रगतिशील शिक्षा के पक्षधर – उसका मानना था कि भारतीय शिक्षा रूढ़िवादी शिक्षा है। इसके स्थान पर ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए।

(ग) शिक्षा के क्षेत्र में धार्मिक तटस्थता – मैकाले के समय हिन्दू पाठशालाओं में हिन्दू धर्म मुस्लिम धर्म की शिक्षा दी जाती रही उनका मानना था कि विद्यालयों में धर्म की शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

निस्यंदन पत्र के दोष –

(क) 1813 के आज्ञा-पत्र की पक्षपातपूर्ण व्याख्या – धन के विषय में कहा गया कि सरकार अपनी मर्जी से खर्च कर सकती है उसे बाध्य नहीं किया जा सकता। भारतीय साहित्य एवं विद्वान तभी श्रेष्ठ है जब वह अंग्रेजी साहित्य को जानते हैं ये तो स्कूलरूपी बाग है।

(ख) प्राच्य साहित्य की दोषपूर्ण आलोचना – उसका प्राच्य अर्थात भारतीय साहित्य के प्रति उचित दृष्टिकोण नहीं था वह उसे निम्नकोटि का मानता है क्योंकी वह भारत के उपनिषदों से परिचित नहीं था।

Scanned with CamScanner

(ग) शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा हो यह उचित नहीं— किसी भी देश की शिक्षा का माध्यम वहां की भाषा होती है उस पर विदेशी भाषा थोपना उचित नहीं है।

(घ) शिक्षा की व्यवस्था उच्च वर्गों के लिए उचित नहीं— किसी भी देश की शिक्षा केवल उच्च वर्गों के लिए हो यह उचित नहीं था क्योंकी शिक्षा को प्राप्त करना सभी व्यक्तियों का अधिकार है।

(ङ) निस्पन्दन का सिद्धान्त :— निस्पन्दन का सिद्धान्त उसका एक तरफा मत है जो केवल उच्च वर्गों को सहायता पहुंचाना चाहता है जो गलत है।

निष्कर्ष :— सार रूप में हम कह सकते हैं कि मैकाले ने कुछ विशेष सिद्धान्तों के अनुसार कार्य किए वह एक प्रकार से भारतीयों के हितों में ही रहे। यह कारण है कि आज भारत में रूढ़िवादी शिक्षा की बजाय प्रगतिशील शिक्षा की नींव पड़ी। जिसके कारण आज भारत में भौतिक, सामाजिक तरक्की ही नहीं हुई अपितु राष्ट्रीय चेतना भी जागृत हुई है। आज इस भाषा के माध्यम से हम देश-विदेश में विचार विनिमय कर पाते हैं। अतः हम देख सकते हैं कि मैकाले के सुझावों से हमें हानि कम और लाभ अधिक हुए हैं।

प्रश्न – माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) पर एक नोट लिखें।

उत्तर – भूमिका – स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत जितना असंतोष जनता में उच्च शिक्षा के प्रति था उतना ही माध्यमिक शिक्षा के प्रति था। माध्यमिक शिक्षा की कमियों को निकालने एवं सिफारिशों के लिए एक कमेटी का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ लक्ष्मण स्वामी मुदालियर को बनाया गया। उन्हीं के नाम पर इसका नाम मुदालियर आयोग पड़ा। इसे माध्यमिक शिक्षा आयोग के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा कमेटी में 10 अन्य सदस्य भी थे। इन्हें निम्नलिखित कार्य सौंपे गए –

1 भारत की माध्यमिक शिक्षा के प्रशासन का अध्ययन एवं सुझाव देना।

2 पाठ्यक्रमों एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन एवं सुझाव प्रस्तुत करना।

3. छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता के कारणों का पता लगाना एवं सुझाव।

4. माध्यमिक विद्यालयों के विषय में सुझाव।

5. परीक्षा प्रणाली का अवलोकन एवं सुझाव।

6. माध्यमिक शिक्षा की अन्य समस्याओं का पता लगाना एवं सुझाव।

आयोग की रिपोर्ट – आयोग ने एक प्रश्नावली तैयार की और इन लोगों को भेजी जो शिक्षा से जुड़े हुए थे। उनके माध्यम से सुझाव माँगे। स्वयं भी तत्कालीन माध्यमिक शिक्षा का अध्ययन किया।

Scanned with CamScanner

29 अगस्त 1953 को भारत सरकार को 244 पृष्ठों की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें 15 अध्याय बनाए)

आयोग की मुख्य सिफारिशें एवं सुझाव –

1. शिक्षा के उद्देश्य संबंधी सुझाव – माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शिक्षा सम्बन्धी सुझाव इस प्रकार प्रस्तुत किए :–

1. व्यावसायिक कुशलता में सुधार – इसमें बताया गया कि विद्यार्थियों को शिक्षा के अतिरिक्त विशेष व्यवसाय की शिक्षा दी जाए।

2. नेतृत्व का विकास – उनमें इतनी क्षमता उत्पन्न करना ताकि वह अपने समुदाय का विशेष नेतृत्व कर सके।

3. देशभक्ति की भावना का विकास – आयोग ने स्पष्ट किया की विद्यार्थियों में सम्पूर्ण विश्व और अपने देश के प्रति सम्मान की भावना जागृत की जा सके।

4. विश्व परिवार की भावना का विकास – आयोग ने स्पष्ट किया कि छात्र-छात्राओं देश के प्रति व सम्पूर्ण विश्व ही मेरा परिवार है ये भावना उत्पन्न करना ताकि लड़ाई-झगड़ों से विश्व को बचाया जा सके।

5. स्पष्ट चिन्तन – विद्यार्थियों को इतना सक्षम करना कि वह बिना किसी पूर्वाग्रह के चिन्तन कर सके।

II. शिक्षा के ढांचे सम्बन्धी सुझाव – आयोग ने स्पष्ट किया कि एक विद्यार्थी 11 से 17 वर्ष तक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करता है। इस स्तर तक वह प्राथमिक, मिडिल एवं माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा प्राप्त करता है। अतः शिक्षा का आदर्श स्वरूप होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

शैली — 8+3+3 होना चाहिए जो इस प्रकार है —

1. 8 वर्ष तक मिडिल तक की शिक्षा होनी चाहिए।
2. 3 वर्ष तक माध्यमिक शिक्षा होनी चाहिए।
3. [illegible] 3 वर्ष डिग्री कोर्स की होनी चाहिए।

III. विद्यालय सम्बन्धी सुझाव — मुदालियर आयोग ने बताया कि भिन्न - भिन्न विद्यालयों की स्थापना की जाए। इस स्तर पर निम्नलिखित विद्यालय हो सकते हैं —

1. महिला विद्यालयों की स्थापना।
2. विशिष्ट विद्यार्थियों के लिए विद्यालय।
3. आवासीय विद्यालय।

IV — पाठ्यक्रम सम्बन्धी सुझाव - आयोग ने सुझाव दिया की तीनों स्तरों पर पाठ्यक्रम अलग - अलग रूपों में होना चाहिए।

1 मिडिल स्तर — इस स्तर पर विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषय पढ़ाए जाने चाहिए —

(क) भाषा (ख) सामाजिक अध्ययन (ग) सामान्य विज्ञान (घ) गणित (ङ) कला एवं संगीत (च) उद्योग की शिक्षा (छ) शारीरिक शिक्षा

2 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा से सम्बन्धित सुझाव इस स्तर पर आयोग ने कहा कि दो तरह का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाना चाहिए -

(1) कोर पाठ्यक्रम - इसके अन्तर्गत भाषाएं एवं अन्य विषय पढ़ाए जाने चाहिए —

(i) हिन्दी भाषा — ऐसा क्षेत्र जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है इन क्षेत्रों में हिन्दी पढ़ाई जाए।

Scanned with CamScanner

(ii) माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा पढ़ाई जाए।
(iii) उच्च स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाई जाए।
(iv) शास्त्रीय भाषाओं का ज्ञान दिया जाए।

कला शिल्प — भाषाओं के अलावा छात्र-छात्राओं को कला शिल्प पढ़ाए जाएं जैसे—
1. सामाजिक अध्ययन
2. सामान्य विज्ञान
3. गणित
4. किसी भी एक शिल्प का ज्ञान देना।

नोट — इनमें से एक विषय अवश्य पढ़ाया जाना चाहिए।
कताई-बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, धातु का काम, मछली पालन, बागवानी, टाइपिंग आदि।

(ख) उच्चतर पाठ्यक्रम — मुदालियर आयोग ने कहा कि उच्चतर स्तर पर निम्नलिखित समूहिक विषय पढ़ाए जाने चाहिए —
(i) विज्ञान (ii) वाणिज्य (iii) कृषि (iv) ललित कला
(v) गृह विज्ञान (vi) तकनीकी विषय (vii) मानव विज्ञान

पाठ्य पुस्तकों सम्बन्धी सुझाव —
1. उच्च समिति द्वारा पाठ्यक्रम तैयार करवाया जाए।
2. अनेक पाठ्य पुस्तकों का समायोजन होना चाहिए।
3. अधिक से अधिक भाषाओं की आलोचित पुस्तकें हों।
4. पाठ्य पुस्तकों में चित्र होने चाहिए।

शिक्षण विधियों सम्बन्धी सुझाव
1. शिक्षण विधियाँ ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान करने वाली हों।

Scanned with CamScanner

2 प्रयोग के माध्यम से शिक्षा दी जाए।
3. स्वयं कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने वाली हो।
4 विभिन्न प्रकार की क्रियाओं पर आधारित हो।
5 अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो।
6 वस्तु परक शिक्षण विधि हो।

प्रशिक्षण कौशल सम्बन्धी सुझाव

1 अध्यापकों के लिए योग्यता निर्धारित होनी चाहिए।
2 अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
3 अध्यापकों का चयन विशेष समिति द्वारा होना चाहिए।
4 अध्यापकों को आवासीय सुविधा दी जानी चाहिए।
5 प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए अध्यापकों को भत्ता दिया जाना चाहिए।

वित्त प्रबन्धन सम्बन्धी सुझाव

आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के धन की व्यवस्था सम्बन्धी सुझाव इस प्रकार प्रस्तुत किए-

1 केन्द्र एवं राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा के वित्त का प्रबन्धन किया जाए।
2. राज्य सरकार विद्यालयों के लिए भूमि उपलब्ध करवाए।
3. विद्यालयों को Tax से मुक्त करवाया।
4 धार्मिक ट्रस्ट आदि को शिक्षा संस्थाएं खोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग का मूल्यांकन-

भारतीय शिक्षा जगत में माध्यमिक शिक्षा आयोग का महत्वपूर्ण स्थान है। इस आयोग ने अपने मूल्यवान

Scanned with CamScanner

समकालीन भारत तथा शिक्षा

प्रश्न- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 पर एक विस्तृत लेख लिखो।

उत्तर- भूमिका— स्वतंत्र देश की शिक्षा को ध्यान में रखकर 1964 में कोठारी आयोग का गठन किया गया।

आयोग ने बड़ी लगनता के साथ काम किया और अपनी रिपोर्ट सन 1966 में प्रस्तुत की। इसका मुख्य सुझाव था कि जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक ही शिक्षा नीति को लागू नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्र का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाएगा। इसके बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता महसूस हुई।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिए गए सुझाव—

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यावसायिक शिक्षा का आधार थी इसलिए इसमें शिक्षा को लेकर निम्नलिखित सुझाव दिए गए—

(I) शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली से संबंधित सुझाव—

(i) सम्पूर्ण राष्ट्र का एक ही पाठ्यक्रम होना चाहिए ताकि भारत की विभिन्नता को बनाए रखा जा सके।

(ii) सीखने का न्यूनतम स्तर न होकर निम्न स्तर को विकसित किया जाना चाहिए।

(iii) परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सामंजस्य स्थापित करना।

(iv) सम्पूर्ण राष्ट्र की जितनी भी संस्थाएँ हैं उन्हें विकसित किया जाना चाहिए।

(v) भारतीय भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं को भी विकसित किया जाना चाहिए।

(vi) शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे जीवन भर सीखा जा सके।

Scanned with CamScanner

(ii) शिक्षा के [illegible] के सम्बन्ध में सुझाव –

भारत की शिक्षा को मजबूती प्रदान करने के लिए इसे तीनों स्तरों में विभाजित किया जाना चाहिए जो इस प्रकार है – 10+2+3

(i) 10 वर्षों से अभिप्राय है कि सभी विद्यार्थियों को केवल सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जाना चाहिए।

(ii) +2 से अभिप्राय है कि आगे के दो वर्षों तक बच्चे को उनकी रुचि पर आधारित विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए।

(iii) +3 स्तर से अभिप्राय है कि महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा [illegible] विद्यार्थी के व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जानी चाहिए।

(iii) अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित सुझाव –

(i) अध्यापकों का चयन एक प्रक्रिया के माध्यम से होना चाहिए।

(ii) एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करें जिससे अध्यापक अच्छी प्रकार से पढ़ा सके।

(iii) अध्यापकों को पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

(iv) अध्यापकों की आर्थिक स्थिति में उचित सुधार किया जाए।

(v) अध्यापकों के लिए नियमावली बनाई जाए।

(vi) अध्यापक वर्ग के लिए विभिन्न तरह के संगठन बनाए जाएं ताकि वह अपनी बात बिना किसी भय के रख सकें।

(vii) किसी भी प्रकार की नीति को लागू करने के लिए अध्यापकों का सहयोग लिया जाए।

(iv) महिलाओं के लिए सुझाव – बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रयत्न किया जाना चाहिए इसके लिए विद्यालय एवं महाविद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए। लड़कियों की शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति का प्रावधान किया जाना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा के लिए प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोलने चाहिए ताकि अधिक से अधिक महिलाओं को शिक्षित किया जा सके।

Scanned with CamScanner

(V) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा के लिए सुझाव –

(i) अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए आवास की सुविधा प्रदान करना।

(ii) इन दोनों वर्गों के बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों का प्रावधान करना।

(iii) इन वर्गों के बच्चों व अन्य वर्गों के बच्चों के साथ मिलजुल कर कार्य कर सके इसकी विशेष व्यवस्था करनी चाहिए।

(iv) इनके लिए आंगनबाड़ी एवं विभिन्न विद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए।

(v) इन वर्गों के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान करना।

(VI) तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित सुझाव – इसके लिए 'अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद' एवं राज्यों के तकनीकी बोर्ड को मजबूत करने तथा कुछ तकनीकी शिक्षा संस्थाओं एवं प्रबन्ध शिक्षा संस्थाओं को स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए ताकि तकनीकी के क्षेत्र में भारत विकसित हो सके।

(VII) शिक्षा के व्यावसायीकरण से सम्बन्धी सुझाव – भारतीय शिक्षा अधिक से अधिक व्यवसाय से जुड़ सके इसके लिए +2 स्तर पर विशेष पाठ्यक्रम का चुनाव किया जाना चाहिए इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए –

(i) मानव विकास मन्त्रालय द्वारा व्यावसायिक कोर्स आरम्भ किए जाने चाहिए।

(ii) राज्य सरकारें विशेष व्यवसाय का प्रावधान करें।

(iii) N.C.T.E, N.C.E.R.T, S.C.E.R.T द्वारा विशेष कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए ताकि युवा व्यवसाय का प्रावधान करें।

(iv) तकनीकी शिक्षा एवं इंजीनियरिंग शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(viii) पाठ्यक्रम संबंधी सुझाव – आयोग ने बताया कि विद्यार्थियों के विशेष पाठ्यक्रम का प्रचलन हो इसके लिए निम्नलिखित विषयों का समावेश होना चाहिए।

(क) प्राथमिक स्तर पर विषयों का चयन –

(1) हिन्दी या मातृभाषा का प्रावधान
(2) गणित का ज्ञान (3) सामाजिक अध्ययन का ज्ञान
(4) विज्ञान का ज्ञान (5) कार्यानुभव को महत्व

(ख) माध्यमिक स्तर पर

(1) हिन्दी अंग्रेजी के अलावा क्षेत्रीय भाषा।
(2) सामाजिक अध्ययन का विशेष ज्ञान
(3) गणित में अंकगणित, बीजगणित एवं रेखागणित का ज्ञान।
(4) शारीरिक शिक्षा (5) संगीत की शिक्षा
(6) कृषि की शिक्षा (7) कार्यानुभव की शिक्षा।

(ग) उच्च माध्यमिक स्तर –

(1) हिन्दी, विदेशी भाषा एवं एक क्षेत्रीय भाषा
(2) भूगोल, नागरिक एवं अर्थशास्त्र की शिक्षा
(3) इतिहास एवं गृह-शास्त्र की शिक्षा
(4) गणित में विशेषकर – ज्यामिति, अंकगणित एवं बीजगणित।
(5) विज्ञान के तहत प्राणी शास्त्र, जीवविज्ञान एवं रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का ज्ञान।
(6) संगीत की शिक्षा
(7) स्वास्थ्य विज्ञान की शिक्षा
(8) ग्रह विज्ञान की शिक्षा (9) नक्षत्र विज्ञान की शिक्षा

(IX) नवोदय विद्यालयों से सम्बन्धित सुझाव – शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्यों के लिए नितांत आवश्यक है कि विशेष बच्चों के लिए विशिष्ट शिक्षा का प्रावधान हो। शहरों एवं महानगरों में तो बच्चों को प्राइवेट विद्यालयों की सुविधा मिल जाती है जबकि ग्रामीण विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को उभारने के लिए

Scanned with CamScanner

है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अनेकों सिद्धान्तों की व्याख्या की है। इन सिद्धान्तों से शिक्षा को नये आयाम प्राप्त को आकर्षक किया जाता है।

(४) राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन — यह शिक्षा नीति इस प्रकार मूल्यों की प्राप्ति के लिए कार्य करती है ताकि विद्यार्थियों की सैद्धान्तिक कमजोरियों को दूर किया जा सके। यही शिक्षा में कमजोरों की समानता को लेकर चलती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पूरी तरह से रोजगार पर आधारित ही नहीं अपितु तकनीकी शिक्षा से जुड़ी हुई है।

निष्कर्ष :— कोठारी आयोग की रिपोर्ट के बाद इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस हुई तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने इसको लेकर उल्लेखनीय प्रयास किया। उन्हीं के प्रयासों के परिणाम स्वरूप इसकी रूपरेखा तैयार हुई। 1985 में इसे संसद में पास कर दिया 1986 में राजीव गांधी ने घोषणा की कि हम राष्ट्र को एक नयी नीति देने जा रहे हैं जो भारत को २१वीं सदी में लेकर जायेगी और जो चुनौतियों/कमियों को पूरी तरह से दूर कर पायेगी। इस नीति के माध्यम से अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विकास पर विशेष बल दिया गया। इससे राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित हुई साथ ही जनमानस को उचित बनाने के लिए यह शिक्षा पूरी तरह से प्रभावशाली रही।

Scanned with CamScanner